श्री जैनकथारत्नकोष

भाग बीजो.

आ पुस्तकमां

पंडित श्रीपद्मविजयजी गणिवर्य वावीशमा तीर्थंकर श्रीनेमीश्वर भगवाननो रास दाखल कर्यो छे

तेमां

विविध प्रकारनी वैराग्यादिक रसो उत्पन्न करनारी आश्चर्यकारक कथाओ आवेली छे.

ए ग्रंथ

चतुर्विध श्रीसंघने भणवा वांचवाने अर्थे

श्रावक, जीमसिंह माणेक

श्रीमुंबइबंदर मध्ये

निर्णयसागर छापखानामां छापी प्रसिद्ध करयुं छे.

संवत १९४९-सने १८९३.

आ पुस्तकने फरीथी छापवानो हक्क सरकारना कायदा मुजब नोधाव्यो छे.